आध्यात्मिक क्रान्ति की अगुआ दादी प्रकाशमणि के साथ विश्व में अध्यात्म की पताका फहराने वाले सहयोगी व साथी बायें से मनोहर इन्द्रा दादी, गंगे दादी, रतनमोहिनी दादी, हृदयमोहिनी दादी, जानकी दादी, प्रकाशमणि दादी, निर्मलशांता दादी एवं चन्द्रमणि दादी समूह चित्र में।

पवित्रता की अनुपम डोर-राखी

रक्षाबंधन का त्योहार भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है। चिरातीत काल से ही बहनें भाई की कलाई पर श्रावणी पूर्णिमा को राखी बांधती चली आ रही हैं। भाई को स्नेह के सूत्र में बांधने वाला यह एक बहुत ही मर्मस्पर्शी और भावपूर्ण रस्म है। इस दिन बहनें भाई को राखी बांधती हैं और उनका मुख मीठा कराती हैं। 4-10 मिनट की इस रस्म में भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। यह धागा

तो एक दिन टूट भी जाता है, परंतु मन को मिलाने वाले स्नेह के सूक्ष्म सूत्र नहीं टूटते। रक्षाबंधन को केवल कायिक अथवा आर्थिक रक्षा का प्रतीक मानना इस त्योहार के महत्व को कम कर देने के बराबर है। भारत मुख्यतः एक आध्यात्मिकता प्रधान देश है। यहाँ मनाये जाने वाले हर त्योहार आध्यात्मिक पृष्ठ-भूमि को लिए हुए हैं। यदि उसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो रक्षाबंधन का भी आध्यात्मिक महत्व है।

भारत में सूत्र सदा किसी आध्यात्मिक मनोभाव को लेकर ही बांधे जाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें, सूत्र बांधने की रस्म शुद्ध धार्मिक है और हर धार्मिक कार्य को शुरु करने के समय कुछ व्रतों अथवा नियमों को ग्रहण करने के लिए यह रस्म अदा की जाती है। जब भी किसी व्यक्ति से कोई संकल्प कराया जाता है तो उसे सूत्र बांधा जाता है और तिलक भी दिया जाता है। सूत्र बांधना और संकल्प करना तथा तिलक देना - इन तीनों ही सहचर्य आध्यात्मिक संकल्प का ही प्रतीक है क्योंकि यह रस्म सदा किसी धार्मिक अथवा पवित्र व्यक्ति द्वारा ही कराई जाती है और सूत्र बंधवाने वाला व्यक्ति संकल्प कराने वाले को दक्षिणा भी देता है - इसी का रूपांतर यह `रक्षाबंधन' त्योहार है। यह त्योहार एक धार्मिक त्योहार है और यह इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने के संकल्प का सूचक है, अर्थात् भाई और बहन के नाते में जो मन, वचन और कर्म की पवित्रता समाई हुई है, यह उसका बोधक है। पुनश्च, यह ऐसे समय की याद दिलाता है, जब परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा कन्याओं-माताओं को ब्राह्मण पद पर आसीन किया, उन्हें ज्ञान का कलश दिया और उन द्वारा भाई-बहन के सम्बन्ध की पवित्रता की स्थापना का कार्य किया, जिसके फलस्वरूप सतयुगी पवित्र सृष्टि की स्थापना हुई। उसी पुनीत कार्य की आज पुनरावृत्ति हो रही है।

यदि ज्ञान की दृष्टि से देखा जाये तो रक्षाबंधन एक बहुत ही रहस्ययुक्त पर्व है। किंवदन्ति है कि इसको मनाने से स्वर्ग की प्राप्ति भी होती है। इसके बारे में एक जगह यह भी वर्णन आता है कि जब असुरों से हारकर इंद्र ने अपना राज्य-भाग्य गँवा दिया था तो उसने भी इंद्राणि से यह रक्षाबंधन बंधवाया था और इसके फलस्वरूप उसने अपना खोया हुआ स्वराज्य पुनः प्राप्त कर लिया था। इसी प्रकार, एक दूसरे आख्यान में यह वर्णन मिलता है कि यम ने भी अपनी बहन यमुना से रक्षाबंधन बंधवाया था और कहा था कि इस बंधन को बांधने वाले मनुष्य यमदूतों से छूट जायेंगे। स्पष्ट है कि ऐसा रक्षाबंधन जिससे कि स्वर्ग का स्वराज्य प्राप्त हो अथवा मनुष्य यम के दण्डों से बच जाये, पवित्रता का ही बंधन हो सकता है, अन्य कोई बंधन नहीं। अब प्रश्न उठता है कि इस त्योहार से इतनी बड़ी प्राप्ति कैसे होती है? इसका उत्तर हमें इस त्योहार के अन्यान्य नामों से ही मिल जाता है। रक्षाबंधन को `विष तोड़क पर्व', `पुण्य प्रदायक पर्व' भी कहा जाता है जिससे यह सिद्ध होता है कि यह त्योहार पवित्रता की रक्षा करने, पुण्य करने और विषय-विकारों की आदत को तोड़ने की प्रेरणा देने वाला त्योहार है।

यह वृत्तांत विश्व ज्ञात है कि शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में जहाँ हर धर्म के प्रतिनिधि श्रोताओं को `प्रिय मित्रों' कहकर सम्बोधित कर रहे थे, तब भारतीय संस्कृति और परम्परा के प्रतिनिधि स्वामी विवेकानंद ने अपने सम्बोधन में कहा था - `प्रिय भाइयों और बहनों' तब वहां का हॉल तालियों से गूंज उठा था और चहुं ओर से आवाज़ आई ``वाह! वाह!'' क्योंकि निश्चित ही बहन और भाई के सम्बन्ध में जो स्नेह है, वह एक अपने ही प्रकार का निर्मल स्नेह है जिसकी दूसरी कोई मिसाल नहीं! इसमें एक विशेष प्रकार की आत्मीयता का भाव है, एक निकटता है और एक-दूसरे के प्रति एक हित की भावना है। ``प्रिय बहनों और भाइयों'' - इन शब्दों में वहां के विश्व धर्म सम्मेलन के श्रोताओं ने सब प्रकार के झगड़ों का हल निहित महसूस किया था। बहन और भाई के निर्मल स्नेह का स्वरूप इस त्योहार का मूल है, लेकिन आज वे अपने आदि स्थान भारत से प्रायः लुप्त होते जा रहे हैं। अतः आज के संदर्भ में राखी की पुरानी रस्म के बजाय एक नये दृष्टिकोण से इस त्योहार को मनाने की ज़रूरत है। दूसरे शब्दों में कहें तो, अर्थ-बोध के बिना राखी मनाने के बजाए अब राखी के मर्म को जानकर इसे मनाते हुए, वातावरण को बदलने की आवश्यकता है, तभी इसकी सार्थकता सिद्ध होगी।

इनकी नज़रों से दादी जी...

दादी ने सिखाई बोलने की कला

दादी जी को जब मैं कहती थी कि मुझे यह कार्य नहीं आता तो दादी जी कहतीं कि बाबा और दादी को आपमें विश्वास है, आप कर लेंगी। यह विश्वास सदा ही मुझे प्रेरणा देता रहता है। एक बार मैंने दादीजी से पूछा कि अभी हमारे पास ज़्यादा स्थान की सुविधा नहीं है तो अधिक आत्माओं को नहीं बुलाना चाहिए, तो दादी ने कहा कि ये बाबा का घर है। यदि दिल बड़ा हो तो सबकुछ संभव है। दादीजी ने ही मुझे बोलने की कला सिखाई। दादीजी की बोलने की कला बहुत ही प्रभावशाली और स्पष्ट होती थी। दादी कभी भी किसी कार्य के लिए नहीं कहतीं कि यह कार्य दादी ने किया, वे सदा कहतीं कि यह सब बाबा का कमाल है। दादी जी के मुझपर अटूट विश्वास ने मुझे स्वयं पर तथा अपने ब्राह्मण जीवन पर विश्वास करने में मदद की।

- ब्र.कु. शशिप्रभा,कोऑर्डिनेटर,स्पोर्ट्स विंग,माउण्ट आबू

दादी जी ने बनाया राजयोग प्रशिक्षिका

हमें शुरु से ही दादी जी की पालना मिली। सन् 1975-85 के दौरान राजयोग शिविर कराने हेतु मुझे दादी जी ने विभिन्न राज्यों में भेजा। समर्पण जीवन के 22 वर्षों तक मैं सेवाकेन्द्रों पर रहकर सेवा करती रही। सन् 1993 से मुख्यालय में दादीजी के पास रहकर सेवा करने का मौका मिला। दादी जी यज्ञ की निश्चित हुई दिनचर्या का खुद भी ध्यान रखती थीं और कोई भी मीटिंग करते हुए यज्ञ सेवाधारियों का भी ध्यान रखती थीं। दादीजी सदा कदम-कदम मेरे साथ रहती हैं और जीवन भर रहेंगी।

- ब्र.कु. गीता,वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका,माउण्ट आबू

कितना विशाल दिल

आदरणीय दादी प्रकाशमणि हमारे लिए एक ममतातयी माँ के रूप में थीं। वे बहुत ही रहमदिल थीं, उनके नयनों में सभी के लिए सदा प्यार छलकता रहता था। चाहे वो छोटे से छोटा व्यक्ति हो या कोई बड़ा वी.आई.पी. हो या बाबा का बच्चा हो। वे टीचर्स का गुणों और शिक्षाओं से श्रृंगार करने में प्रवीण थीं। एक बार डायमंड हॉल में टीचर्स की भट्ठी में हज़ारों की बड़ी सभा में दादी जी ने खुले दिल से टीचर्स को कहा कि बहनों यदि आपको कुछ तकलीफ हो या आपको कुछ भी चाहिये तो मुझे आकर कान में कह दो, मैं दे दूंगी। बाबा का घर सो अपना घर है। ये सुनकर मेरे आँखों से आंसू छलक आये। मुझे अनुभव हुआ कि दादीजी का दिल कितना विशाल है, माँ का दिल है, कितना अपनापन है। **- ब्र.कु. हेमलता,समन्वयक,इन्दौर क्षेत्र**

दादी की सेवाभाव का दृश्य अभूल है

1992 में दादी जी का पूरा दिन अति व्यस्तता में बीता। दादीजी ट्रेन का सफर करके नागपुर पहुँचे। उन दिनों रास्ते इतने अच्छे नहीं थे। खुरदरे रास्तों का सफर करते हुए दादीजी रात को हमारे पास पहुँचे। करुणामयी दादी जी अपने आराम, भोजन का संकल्प ना करते पहले भाई बहनों से मिलती थीं, फिर भी सुबह 4 बजे दादीजी योग में ही मिलतीं। अकोला सेंटर में पुष्पा दीदी के पाँव पर गलती से उबलता पानी गिर गया, तब दादी ने एक स्नेहमयी माँ के रूप में बहुत ही प्यार से अपने हाथों दीदी का घरेलू इलाज किया। वह दृश्य देख मेरा हृदय गद्गद् हो रहा था। ऐसी प्यारी, अथक सेवाधारी, त्याग मूर्ति के पुण्य स्मृति दिवस पर मेरा कोटि कोटि प्रणाम। **- ब्र.कु. रजनी,नागपुर क्षेत्र**